ओम् शान्ति
महाकुम्भ मेला- 2010
शिव परमात्म अनुभूति मेला
-:आयोजक:-
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
स्थान प्लाट नं.-7, नील धारा हरिद्वार
E-mail: haridwar@bkivv.org

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय:
पाण्डव भवन,
आबू पर्वत, (राजस्थान)

स्थानीय केन्द्र:
ऋषिकुल के सामने हरिद्वार
फोन नं. 226434

पत्रांक ..... दिनांक .....

निस्वार्थ सेवा – प्रसन्नता की गंगोत्री : ब्रह्माकुमारी अचल दीदी

12 अप्रैल, हरिद्वार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नीलधारा में आयोजित शिव परमात्म अनुभूति मेले में सांयकालीन प्रवचन माला में राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अचल दीदी जी ने सभाग्रह में उपस्थित जनसमुह को संभोधित करते हुए कहा कि यदि मानव को परमात्मा के इस गुण का अनुभव करना हो कि परमात्मा प्रसन्नता के सागर हैं तो उसे उन पीड़ितों और अभावों में फंसे दुःखी लोगों की निःस्वार्थ भाव से सेवा शुरू कर देनी चाहिए। निःस्वार्थ सेवा प्रसन्नता की गंगोत्री हैं। बिना प्रतिदान के भाव के मानवता के प्रति आप का अंशदान भी आपके जीवन में प्रसन्नता ले आएगा। मानव जीवन में प्रसन्नता प्रभुप्रदत सर्वाधिक महत्वपूर्ण अमृत प्रसाद है। जीवन के बहुरंगी आयामों में सफलता की कथा गाथा का प्रेरणा स्त्रोत प्रसन्नता है। जीवन की विषम परिस्थितियों मे से कुशलतापूर्वक बाहर निकल आने का मार्गदर्शक यदि कोई है तो वह है मनुष्य के खुद का प्रसन्नता भरा मानसिक दृष्टिकोण चाहे कोई भी कष्टकारक परिस्थितियां क्यों न हो।

निःस्वार्थ भाव से जो दूसरों का उपकार करता और उन सभी लोगों के लिए प्रभु से मंगलमय प्रार्थना करता उसके लिए शुभ भावना रखता, दूसरों के आंसू पोंछता, उनमें धैर्य और उत्साह का संवध र्न करता, ऐसे परहितकारक महापुरूष के खुद का जीवन प्रसन्नता का अक्षय स्त्रोत बन जाता हैं। परोपकारी हृदय में स्वतः ही प्रसन्नता के सुमन खिलते है। मनुष्य, मनुष्य कहलाने का अधिकारी भी तभी बनता हैं जब वह परोपकारी वृति वाला बनता है।

ऐसे परोपकारी भाव वाले प्रसन्न मनुष्य इसलिए सफलता को प्राप्त करते हैं तथा जीवन के सभी केंद्रों पर लोग उनका जानदार स्वागत करते है चाहे वह मित्र मंडली हो या ऑफिस व्यवसाय हो या दुकान। इसके लिए अवगुणी दशष्टि को त्यागना आवश्यक हैं। अपने आप से लोगों को इस बात की प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम किसी में भी अवगुण को नहीं बल्कि सदगुणों को देखेंगे। जबकि मनुष्य ईश्वर की सर्वोतम रचना है फिर निश्चित ही ऐसा नहीं हो सकता कि उसके हाथ गुणों से खाली हो। जगत में परोपकार के लिए परमात्मा ने उसके दामन में कुछ बहुमूल्य गुण रूपी रत्न अवश्य ही छिपाकर दिये होगें। अब यह निर्भरता आपके ऊपर है कि आप उसे देख पाते है या नहीं। हम सदा मीठी और प्रेरणामय वाणी का प्रयोग करेंगे, सदा दूसरे को मिलते ही मुस्कान भरी प्रसन्नता की दशष्टि से देखेंगे। खुद के जीवन में इस बात के परिणाम आश्चर्यजनक और सुखद होंगे।

इस अवसर पर मेले का अवलोकन करने आए कानपुर के महामण्डलेश्वर स्वामी श्याम गिरी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्था का जो उद्देश्य है वह बहुत सराहनीय है, मैं कामना करता हूँ कि इस प्रकार के मिशन से समाज में पूर्ण जागृति होगी और आज जो हमारा समाज कुम्भकरण की तरह सोया हुआ है वह जरूर बदलेगा। जन–जागरूकता का यह जो मिशन चल रहा है वह एक दिन अपने परिणाम को अपनी पूर्ण अवस्था में लायेगा और तब ही विश्व में शान्ति होगी। दानव से मानव व मानव से देवत्व की प्राप्ति मानव को होगी। मैं कल्पना करता हूँ कि कलयुग में ही सतयुग आयेगा, राम राज्य आयेगा और एक दिन ये भारत विश्व गुरू कहलायेगा।

महन्त 1008 स्वामी रामानन्दपुरी जी ने भी मेले की सराहना करते हुए कहा कि भारतीय संस्कशति का जीता जागता ह्रास व उसका उत्थान झांकियों द्वारा बहुत अच्छे ढंग से प्ररस्तुत किया गया है, जिसकी आज के समय में आवश्यकता है। ऐसी संस्था को हर प्रकार से सहयोग करना हम सबके हित में है।